कत्थक नृत्य के परम्परागत घरानो की शैलीगत विशेषतायेंः वर्तमान परिप्रेक्ष्य में इनकी सार्थकता

प्रो.भावना ग्रोवर
विभागाध्यक्ष, परफारमिंग आर्टस विभाग
स्वामी विवेकानन्द सुभारती विश्वविद्यालय,
मेरठ

कोई भी कला अपनी एक विशेष शैली अपने में समाहित किए हुए रहती है। तथा वह शैली अन्य शैलियों से भिन्न है। तभी उसका अपना ही अस्तित्व होता है। भारतीय शास्त्रीय नृत्यों के अन्तर्गत कत्थक नृत्य का प्रमुख स्थान है। उन्नीसवी सदी में कत्थक नृत्य में घराने अस्तित्व में आयें। जब कथक नृत्य के विद्वानों द्वारा कुछ मौलिक प्रयोग कर नये तत्त्व समाहित किये गये तथा एक पृथक् शैली को विकसित किया गया तो वह प्रतिष्ठित होकर घराना कहलाया। मूलतः तो यह एक विशेष शैली के रूप में सामने आये तथा तब वे जिस घर से सम्बन्धित थे तथा वंशानुक्रम होने पर धराने कहलाये।

'घराना' शब्द से स्पष्ट है कि जो विशेष शैली अनुवांशिक रूप से चलती रही, उन्हें ही घराने की मान्यता प्राप्त हुई। डॉ. प्रेम दवे लिखती है कि ''जब कोई प्रतिभाशाली कलाकार किसी नवीन कला शैली की उद्भावना करता है और वह शैली उसके शिष्यों प्रशिष्यों द्वारा कम से कम तीन पीढ़ियों तक गतिमान रहती है, तो उसे ''घराना'' नाम से सम्बन्धित किया जाने लगता है।''1 कथक नृत्य में घरानों के नाम किसी व्यक्ति विशेष के नाम पर न रखकर उस स्थान के नाम पर रखा गया जहाँ पर मूल रूप से उस शैली का जन्म हुआ एवं वह विकसित हुई।

इस सन्दर्भ में पं. कार्तिक राम लिखते है कि ''उन्नीसवीं शताब्दी के नये दशक के पूर्व व्यक्ति विशेष के नाम से कथक घराने कायम किये जाते थे किंतु सन् 1895 ई. में माधोसिंह ने जयपुर में विद्वानों की एक सभा बुलाई और चले आ रहे मतभेदों को समाप्त करने के लिए यह निर्णय लिया गया कि व्यक्ति विशेष के नाम के बजाय स्थान के आधार पर घराने कायम किये जाएँ।''2

कथक नृत्य में मुख्य रूप से तीन घराने प्रसिद्ध हैं–

(1) लखनऊ घराना। (2) जयपुर घराना (3) बनारस घराना।

लखनऊ घराना–

लखनऊ घराने का उद्भव अवध के नवाब आसफउददौला के समय से माना जाता है। लखनऊ के ईश्वरी प्रसाद जी के पुत्र प्रकाश जी दयाल जी हरिलाल जी नवाब साहब के यहाँ लखनऊ आये और दरबारी नर्तक नियुक्त हुए। लखनऊ दरबार से ही इनका वंशानुक्रम चलता गया जिसमें अनेक महान कलाकार, दुर्गाप्रसाद जी, ठाकुर प्रसाद जी मान जी थे। ठाकुर प्रसाद जी को तो नवाब वाजिद अलीशाह ने गुरू भी बनाया था। इसके उपरान्त बिन्दादीन भहाराज, कालका प्रसाद, भैरो प्रसाद। इसी क्रम में अच्छन महाराज, बैजनान प्रसाद व शम्भू महाराज। अच्छन महाराज के पुत्र प0 बिरजू महाराज हुए। जिन्होने देश विदेश में कत्थक नृत्य का स्थान प्रतिष्ठित किया। वर्तमान में महाराज जी स्वयं व उनके पुत्र व पपौत्र कत्थक नृत्य की सेवा में रत है।

नवाबो के संरक्षण में रहने के कारण लखनऊ घराने का अन्दाज प्रारम्भ से ही नजाकत व नफासत का रहा है। श्रंगारिकता से ओत–प्रोत इस घराने की शैली अन्यंत लोकप्रिय है।

लखनऊ घराने की नृत्य शैली की विशेषताऐं –

1. लखनऊ घराना नजाकत व कोमलता पूर्ण है। लखनऊ घराने में पैरों की निकासी पर अधिक ध्यान न देकर, अंगों की खूबसूरत बनावट पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

2. विशुद्ध नृत्य के बोलों के अतिरिक्त, पखावज–तबले के बोलों व प्रिमलू नाचने की परम्परा है।

3. लखनऊ घराने का ठाट बनाने का अपना विशेष ढंग है। छोटे–छोटे ठाट बाँधकर नर्तक सम पर विभिन्न प्रकार से मुद्रा बनाकर खड़ा होता है। ठाट बाँधने के ढंग पर लखनऊ के नवाबी संरक्षण का प्रभाव स्पष्ट दिखाई पड़ता है।

4. गत निकास का प्रचलन अधिक है तथा गतभाव का कम। विभिन्न प्रकार के गत निकास जो नवाब वाजिद अली शाह द्वारा 'बनी' में दिये गये है, नाचे जाते हैं दोनों ओर से गत बनाने का प्रचलन है।

5. ठुमरी गाकर भाव बताना इस घराने की प्रमुख विशेषता है। बिन्दादीन महाराज द्वारा रचित ठुमरियों पर शम्भू महाराज गाकर ही भाव बताते थे।

6. ततकार के टुकड़ों में 'ताऽ थेई तत थेई' के विभिन्न प्रकार इस घराने में नाचे जाते हैं। धाताकथूंगा व किटतकथुंथुं के बोलों का इस घराने में अत्यधिक प्रचलन है।

7. इस घराने के नर्तक पढ़न्त भी बोल के वजन अनुसार कोमलतापूर्ण व भावपूर्ण अभिव्यक्ति के साथ करते हैं।

8. इस घराने के कलाकार नवाबों के संरक्षण में रहने के कारण वेषभूषा भी अन्य घरानों से भिन्न पहनते हैं। पुरुष नर्तक चूड़ीदार पायजामा व बगलबंदी पहनते हैं तथा नृत्यांगानायें चूड़ीदार पायजामा, लम्बा फ्रॉक, दुपट्टा व कामदार टोपी पहनती है।

लखनऊ घराने के नृत्याचार्यों ने समय–समय पर अनेक प्रयोग कर नृत्य के तीनों पक्षों को समृद्ध किया है। यह अत्यधिक प्रचलित व पूर्ण घराना है।

जयुपर घराना –

वर्तमान समय में जयपुर घराना एक समृद्ध परम्परा के रूप में आज हमारे सामने है। अनेक विद्वानों का मत है कि कथक नृत्य शैली का जयपुर घराना सबसे प्राचीन है। जयपुर घराना अन्य घरानों की भांति केवल एक वंश परम्परा से पल्लवित न होकर, राजस्थान में फैले सैंकड़ों गाँवों में रहने वाले कथकों से विकसित हुआ है। अतः हम यहाँ उसी परम्परा का वर्णन कर रहे है जिसे जयपुर घराने की मान्यता प्राप्त है।

प्रायः सभी विद्वानों का मत है कि भानू जी ही जयपुर घराने के प्रवर्तक हैं। कहा जाता है कि भानू जी भगवान शिव के अनन्य भक्त थे। किसी संत द्वारा इन्हें तांडव नृत्य की शिक्षा प्राप्त हुई। भानू जी ने अपने पुत्र मालू जी को भी इसकी शिक्षा दी। मालू जी के दो पुत्र हुए – लालू जी व कान्हू जी। दोनों पुत्रों ने नृत्य की शिक्षा अपने पिता से प्राप्त की। इसी प्रकार यह शैली भी पीढ़ी दर पीढ़ी घराने की विशेषताओ को दहेजते हुए वर्तमान की एक प्रतिष्ठित शैली है।

जयपुर घराने को प्रतिष्ठित करने में हनुमान प्रसाद जी के कुछ रिश्ते के भाईयों की वंशावली भी विशेष महत्त्व रखती है। जिनमें श्री चुन्नीप्रसाद, दुर्गाप्रसाद, श्यामलाल, गोवर्धन जी के नाम उल्लेखनीय हैं। ये सभी जयपुर घराने की शाखा 'कनवारी के कथक' से संबंधित हैं। इस शाखा का प्रारम्भ चतुरलाल जी से माना जाता है। चुन्नीलाल जी के तीन पुत्र सुन्दर प्रसाद, जयलाल जी व मालू जी तथा एक पुत्री लछमा हुई। सुन्दर प्रसाद जी व जयलाल जी ने कथक नृत्य क्षेत्र में विशेष ख्याति अर्जित की।

पं. सुन्दर प्रसाद जी की शिष्य परम्परा अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। इनमें उनके चचेरे भाई पं. गौरीशंकर व अन्य शिष्यों में स्व. देवीलाल जी, सुश्री उमा शर्मा, मोहनराव कल्याणपुरकर, दुर्गालाल, ओमप्रकाश, उर्मिला नागर व रानी कर्णा विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इन सभी नर्तकों ने कथक नृत्य क्षेत्र में विशेष ख्याति अर्जित की है। वर्तमान में प. राजेन्द्र गंगानी, मुख गीतांजलि लाल, उनके पुत्र अभिमन्यु लाल, विद्या लाल व अन्य अनेक शिष्य शिष्यायें जयपुर घराने के परंपरा को आगे बढ़ा रहे है।

इस घराने का नृत्य हिन्दू राजाओं के दरबार मे पुष्पित व पल्लवित हुआ जिस कारण इसकी नृत्य शैली में सात्विकला बरकरार रही। श्रंगारिकता से हटकर सात्विक अभिनय इस नृत्य शैली की मुख्य विशेषताओं में से एक है। कथक नृत्य में जयपुर घराना अत्यधिक विस्तृत है। छोटी–छोटी अनेक शाखाएँ–प्रशाखाएँ भी हैं।

जयपुर घराने की नृत्य शैली –

जयपुर घराने के नर्तक हिन्दी राज दरबारों से संबंधित रहे हैं। अतः इस घराने में कथक नृत्य की मूल परम्परा अब भी सुरक्षित है। यद्यपि यहाँ के राजा वीर व जोशीले होते थे। यही प्रभाव इस घराने के नृत्य पर भी पड़ा है। जयपुर घराने की नृत्य शैली की विशेषताएँ निम्नलिखित हैः–

1. यह नृत्य शैली ओजपूर्ण व जोशीली है। राजस्थान के वीर राजा ओजपूर्ण नृत्य देखना ही पसन्द करते थे। अतः इस शैली में ताँडव को अधिक महत्त्व दिया गया, परन्तु बाद में लास्य अंग जुड़ जाने से इस नृत्य में परिवर्तन हुआ। वर्तमान में जयपुर घराने के नृत्य में लास्य के ललित अंगहार भी हैं तथा ताँडव की उद्धत चारियाँ भी।

2. इस नृत्य शैली में क्लिष्ट तालों में जेसे – धमार, चौताल, रुद्र, बसंत, अष्टमंगल, लक्ष्मी, गणेश आदि तालों में नृत्य करने का प्रचलन है।

3. पैरों की विशेष तैयारी पर इस घराने के नर्तक विशेष ध्यान देते है, हस्तकों पर कम। ततकार द्वारा कठिन लयकारियाँ प्रस्तुत करना इस घराने की खास विशेषता है।

4. भ्रमरी का भिन्न–भिन्न प्रकार से व अधिक प्रयोग इस घराने की विशेषता है। एक पाँव का चक्कर जयपुर घराने की ही देन है। एक पाँव पर दो, तीन, चार चक्कर लेना, सब दिशाओं के क्रमशः चक्कर लेना, आकाश भ्रमरी इस घराने के नर्तक सहज ही लेते हैं।

5. जयपुर घराने में पखावज के बोल अर्थात् लम्बी–लम्बी व क्लिष्ट परने नाचने का प्रचलन है।

6. गत निकास के स्थान पर गतभाव का अधिक प्रयोग किया जाता है। गतभाव भी धार्मिक कथानकों पर आधारित होते हैं जैसे – गोवर्धन पूजा, कालिया मर्दन आदि।

7. इस घराने में कवित्तों का नर्तन निजी विशेषता है। अनेक नर्तकों द्वारा असंख्य कवित्तों की रचना की गई है जो प्रचलन में है।

8. अभिनय पक्ष में ठुमरी की अपेक्षा भजन अथवा पद पर भाव प्रस्तुत करते हैं। भावाभिव्यक्ति सात्विक रहती है।

9. नृत्य के बोलों के अतिरिक्त तबला, पखावज के बोल पक्षीपरन, जाति परन, प्रिमलू आदि विभिन्न प्रकार के बोलों को नाचने का प्रचलन है।

10. जयपुर घराने के नर्तक चमत्कारिक नृत्य भी करते हैं जो अन्य किसी घराने में नहीं है जैसे – ताल की एक आवर्तन में फर्श पर बिछे गुलाल से हाथी बनाना, तलवार की धार पर नृत्य करना, एक भी बताशा बिना फोड़े, उन पर नृत्य करना आदि। उपरोक्त सभी विशेषताएँ देखने से स्पष्ट है कि जयपुर घराने का परम्परा समृद्ध एवं सुदीर्घ है।

बनारस घराना –

कथक नृत्य की तीसरा घराना बनारस घराना है। इस घराने का उद्‌भव पं. जानकी प्रसाद जी (जानकी सहाय) से माना जाता है। ये प्रसिद्ध तबला वादक पं. रामसहाय (बनारस घराना) के भाई थे। कथक का यह घराना जानकी प्रसाद घराने के नाम से भी जाना जाता है। बनारस घराने की वंश परम्परा जानकी प्रसाद जी के शिष्य श्री हुकमराम जी के सुपुत्र चुन्नी लाल जी से शुरु होती है जो जयपुर से बनारस आये थे। कृष्णकुमार जी ने ही बनारस घराने की परम्परा को सृदृढ़ किया। ये भी नृत्य जगत् में ख्याति प्राप्त कलाकार हैं।

इस घराने की नृत्य शैली अन्य दोनो घरानो से निम्न है। विशुद्ध नृत्य बोलो का प्रयोग व प्रदर्शन, तैयारी व आंज इस घराने की प्रथक विशेषतायें हैं।

बनारस घराने की नृत्य शैली –

बनारस घराना अन्य दोनों घरानों से बिल्कुल निम्न है। इस घराने की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

1. बनारस घराने की सबसे प्रमुख विशेषता नृत्य के शुद्ध बोलों पर नृत्य करना है। इन घराने में केवल शुद्ध नटवरी के बोलों पर नृत्य किया जाता है। तबला–पखावज आदि के बोल–नृत्य में प्रयुक्त नहीं होते है।

2. इस घराने में ही नृत्य की सही चक्रदार गतें सुनने को मिलती हैं। जहाँ एक ओर अन्य घरानों में तिग्दा दिग दिग पर चार पैर लगाते हैं वहीं इस घराने में छः पैर लगाये जाते हैं। इस घराने की नृत्यशैली अत्यन्त कठिन व श्रम साध्य है।

3. बोलो के वजन के अनुसार ही अंग संचालन किया जाता है। शास्त्रोक्त अंग जैसे – उरप तिरप, त्रिभंग, लाग–डाट आदि का प्रयोग किया जाता है।

4. इस घराने में भ्रमरी का प्रयोग अधिक नहीं किया जाता। इस घराने का मुख्य लक्ष्य अंगों की स्पष्ट बनावट व पैरों की स्पष्ट निकासी है। तेजी व तैयारी नहीं।

5. बनारस घराने में 'ठुमरी' पर भाव बताना उनकी विशेषता है। 'ठुमरी' का केन्द्र बनारस माना गया, यहाँ के नर्तक बड़ी कुशलता से भाव प्रस्तुत करते हैं। महाराज श्री कृष्णकुमार इस पक्ष में दक्ष थे।

6. यह एक शुद्ध व सात्विक नृत्यशैली है। नृत्य करते समय, ठुमका, कमर चलाना, हल्के हाव–भाव वर्जनीय है। इस घराने का नृत्य केवल मनोरंजन का साधन न होकर भक्ति–भावना रूपी व ईश्वर की ओर ले जाने वाला है।

वर्तमान समय में इनकी सार्थकता –

प्रारम्भ में जब घराने अस्तित्व में आये तब यह अपनी – अपनी प्रथक विशेषताओं को लिए हुए थे। पीढ़ी –दर –पीढ़ी यही क्रम चलता रहा। वंशजो ने उसी शैली को प्रचारित प्रसारित किया जो उन्होने अपने घराने में सीखी। शिष्यो व शिष्याओ के लिए भी यही नियम मान्य था। क्योंकि संगीत व नृत्य विद्या में गुरू शिष्य परम्परा का विशेष महत्व है। अतः गुरू जिस घराने से सम्बन्धित है, केवल शैली का अनुसरण करना सभी शिष्यो के लिए अनिवार्य था। परन्तु आज हम इक्कीसवीं सदी में जी रहें है, जहाँ सभी कलाएँ बन्धन मुक्त होती जा रही है। वर्तमान में किसी भी घराने की शैलीगत विशेषताओं का कट्टरता से अनुसरण करना कठिन है क्योंकि नृत्य प्रस्तुतिकरण का दायरा कुंचित नहीं है। यद्यपि घराने के कलाकार अर्थात वंशज अपने घराने के शैलीगत विशेषताओं को ही प्रस्तुत करते है। इसका मुख्य कारण यह है कि उनकी पहचान उस घराने से है और यदि वो ही इसका अनुसरण नही करेंगे तो भविष्य में घराना शब्द केवल नाम के लिए रह जायेगा और प्रस्तुतियाँ केवल कत्थक नाम से होगी। परन्तु जो शिष्य शिष्यायें किसी घराने के वंशज नही है वो तालीम तो गुरू शिष्य परम्परानुसार ही किसी घराने को शैलीगत विशेषताओ से लेते है किन्तु प्रस्तुतिकरण में शैलीगत विशेषताओं को दर्शाते हुए अन्य घरानों के बोलो को भी समाहित कर रहे है। जिससे प्रस्तुतिकरण एक पुष्पगुच्छ के समान हो जाता है कि एक गुच्छ में भिन्न–भिन्न प्रकार के फूल अपनी खुशबू के साथ महक रहे है। मेरे विचार से ऐसा करना उचित भी है। प्रारम्भ से जब हम एक शैली का अनुसरण करते है। तो अवश्य ही वह शैली हमारे नृत्य मे पूर्ण रूप से दिखाई देगी किन्तु अन्य घरानो की शैलीगत विशेषताओ को अपनाना भी एक व्यापक दृष्टिकोण है। सभी घराने "कथक" है, कथक "घराना" नहीं। अतः वर्तमान परिप्रेक्ष्य में शैलीगत विशेषतायें गौण होती जा रही है तथा एक पूर्ण प्रस्तुतिकरण में सभी घरानो की विशषताओं का समावेश किया जा रहा है। कथक नृत्य के भविष्य के लिए यह उचित भी है।

सन्दर्भ सूची –

1 दवे, डॉ. प्रेमः कत्थक नृत्य परम्परा, पृष्ठ–31

2 राम, पं. कार्तिकः रायगढ़ में कथक, पृष्ठ–38

3 दाधीच, डॉ. पुरुः कथक नृत्य शिक्षा भाग–1,

4 दाधीच, डॉ. पुरुः कथक नृत्य शिक्षा भाग–1,

5 टाक, डॉ. मायाः ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में कथक नृत्य,

6 गर्ग, डॉ. लक्ष्मीनारायणः कथक नृत्य,

7 टाक, डॉ. मायाः ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में कथक नृत्य,